Research Directions
Volume 1 , Issue 1 / July 2013 **ISSN:-2321-5488**

Research Article

कृष्णा सोबती के कथा साहित्य में चित्रित ग्रामीण आधुनिक नारी जीवन

सुरेखा लक्ष्मण तांबे .
सहयोगी प्राध्यापक,
यशवंतराव चव्हाण महाविदयालय, पाचवंड ,सातारा .

सारांश

स्त्री–पुरुष के आधार से मानव जीवन का विकास होता है । समाज–व्यवस्था में दोनों के कार्य महत्वपूर्ण होते हैं । प्राचीन काल में नारी को देवी का रुप माना जाता था । लेकिन भारतीय समाज में जिस समय सामंतवादी युग से नारी की ओर देखने का दृष्टिकोण बदल गया। सामंतवादी विलासी राजा लोग नारी को भोग विलास की वस्तु मानते थे । उस समय से नारी को भोग्या के रूप में देखा गया है ।

प्रस्तावना :–

ग्रामीण नारी जीवन

नारी जीवन के संपूर्ण–आदर्श पतिव्रत्य में ही समाहित माने जाते हैं । फिर भी भारतीय संस्कृति में नारी का अलग स्थान है । इसके बारे में यशदत्त शर्मा जी कहते हैं – '' भारतीय संस्कृति में नारी स्थान एकाकी है, उत्तम है, स्नेह, ममता और प्रेम का प्रतीक है । वह जीवन का रस है, अमृत है और प्राण है ।''[1] इसका लाभ उठाकर आज नारी को बंदी बनाया है । पति सेवा यही उसका आदर्श मानकर संकुचित दायरे में बंद करने का प्रयास किया गया है । स्वातंन्र्योत्तर काल में युग परिवर्तन के साथ देश में सांस्कृतिक, राजनीतिक, समाजिक परिस्थिती में परिवर्तन हो गया है । इससे नारी में भी परिवर्तन से सभी क्षेत्र में समानाधिकार दिखाई देता है । आज भी पुरुश प्रधान समाज में वैसे पुरुष और नारी में कोई मौलिक असामनात नहीं है । फिर भी वास्तविक रुप से समाज में पुरुष जैसा स्थान नारी को नहीं मिला है । केवल शिक्षा के कारण नारी जीवन में आर्थिक और वैचारिक स्तर पर परिवर्तन हुआ है । आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्रता मिलने से नारी स्वतंत्र हो सकती है । शिक्षा प्राप्त करने से वह आर्थिक दृष्टि से स्वातंत्र प्राप्त कर सकती है । शिक्षा के कारण नारी में आत्मनिर्भर बनने की क्षमता आ गई ।

आर्थिक स्वातंत्रता के बिना नारी का शोषण होत जाता है । नारी जन्म से अंत तक किसी ना किसी पर अवलंबित रहती है । जिसका प्रमुख कारण आर्थिक है । नारी ने स्वावलंबी बनने के लिए, व्यक्तित्व विकास के लिए अर्थार्जन शुरू किया । नारी का घर के बाहर निकल पर अर्थार्जन करना कोई नई बात नहीं है । प्राचीन काल से निम्नवर्गीय नारी पुरुषों के साथ खेतों में, छोटे–छोटे व्यवसायों में, कारखानों में मजदूरों के रूप में काम करती आ रही है । मध्य और उच्च वर्ग की नारियों के लिए घर से बाहर निकलकर काम करने की बात नई है । प्राचीन काल से नारी का काम गौण माना है । पुरुष प्रधान संस्कृति में नारी का स्थान गौण होने के कारण उनका काम भी गौण माना है । लेकिन आज नारी इसमें परिवर्तन लाई है । आधुनिक विचाराधारा ने नारी को सोचने के लिए, अपने जीवन के प्रति निर्णय लेने के लिए विवश कर दिया है । उसके घर से बाहर निकलकर आर्थिक दृष्टि से सक्षम बनाने का निर्णय लिया है । यह निर्णय उसके लिए एक चुनौती है । इसके बारें में कृष्णा बिहारी मिश्र के अनुसार – ''वर्तमान परिवेश में शादी से बढकर नारी आर्थिक सुरक्षा चाहती है, जिससे वह जिंदगी की बिकट से बिकट समस्या पर दो टूक निर्णय ले सके और अपने नीचे एक पक्की जमीन पा सके और अपने स्वाभिमान की रक्षा कर सके ।''[2] इस प्रकार आधुनिक काल में नारी शादी से अधिक आर्थिक स्थिति को प्राधान्य देती है । भारतीय नारी का रूप प्राचीन काल में देवता के समान महान था । बाद में राजनीतिक परिस्थिति से इसमें बदल होकर नारी भोग विलास की वस्तु बन गई । आज नारी के इस स्थिति में परिवर्तन हो गया है˙ इसके बारे में डॉ. रेवा कुलकर्णी ने कहा है – '' समाज में उसको कभी देवता के उदात्त स्थान पर विभूषित किया गया था, तो कभी उसके साथ दासी जैसा व्यवहार किया गया था तो कभी उसका मूल्य मन–बदलाव के खिलौने से अधिक नहीं माना गया ।''[3] स्वातंन्र्योत्तर काल में नारी शिक्षा के कारण नारी जीवन में आर्थिक और वैचारिक स्तर पर भी परिवर्तन हुआ है । इस परिवर्तन का लाभ अधिकतर शहरी नारियों ने उठाया है । ग्रामीण जीवनमें नारियों का स्थान अधिक तर चुल्हा–चौका और बच्चों तक सीमित रहा है । ग्रामीण नारी आज भी अज्ञानी है । अज्ञान और आर्थिक परावलंबन के कारण वह दु:ख भुगत रही है । उनपर अन्याय और अत्याचार हाता है। नारी के साथ होनेवाले इस तरह के व्यवहार ने कृष्णा सोबती को भी प्रभावित किया है । अतः उनके कथा–साहित्य में ग्रामीण नारी जीवन का पर्याप्त मात्राा में चित्रण हो गया है । कृष्णा सोबती ने जिस प्रकार की ग्रामीण नारी का चित्रण किया है वह वास्तविक प्रतीत होता है । उन्होंने ग्रामीण नारी की विविध समस्याओं को, ग्रामीण नारी की अभावग्रस्त जिंदगी को तथा उसके सामाजिक, पारिवारिक तथा दांपत्य–जीवन को पर्याप्त रूप से चित्रित किया है । उन्होने ग्रामीण नारी के विभिन्न रूपों को अशिक्षित नारी, संयुक्त परिवार की नारी, आधुनिक नारी, मजदूर नारी, पीडित नारी, नारी का शोशण और बदफेली नारी आदि को यथार्थ रुप में चित्रित किया है ।

आधुनिक नारी

आज नारी ने परंपरा और आधुनिकता के दोहरे दबाव को महसूस किया । नारी घर और बाहर दोनों को दृष्टि में रखकर ललककर देख रही थी । पुराने और नए के बीच का संतुलन खोज रही थी । स्वतंत्रता के बाद एक ओर पुराने संस्कार, उनकी जडता के प्रति विद्रोह, स्वयं को आत्मनिर्भर बनाने का हठ और सामाजिक मानसिकता को चुनौती देती हुई नारी अपनी पहचान खोज रही है । समाज व्यवस्था में आरंभ से ही विचारकों द्वारा नीति, मर्यादा, संस्कृति की रक्षा का दायित्व नारी को सौंपा जाता रहा है । जयश्री बरहाने ने नारी स्थिति को स्पष्ट करते हुए कहा – '' युगों–युगों से नारी का पराश्रित कर्तव्य–पारायण रूप देखने का अभ्यस्त रूढिग्रस्त समाज नारी के स्वावलंबी रूप को भी सह नहीं सका, किंतु फिर भी नारी आज दृढ आत्मविश्वास और गहरे स्वाभिमान से अपना व्यक्तित्व निर्माण करने लगी है। ''[4]

आधुनिक हिंदी शब्दकोश में आधुनिकता का अर्थ दिया है – '' जो आधुना, अभी अभी अस्तित्व में आया हो, सांप्रतिक, आज कल का वर्तमानकालिक, नवीन अर्वाचीन समसामायिक । ''[5] भारत में आधुनिक काल से पहले नारी का सामाजिक जीवन दुर्लक्षित और उपेक्षित था । वह पुरुषों के मन बहलाव का ऐसा खिलौना थी जिसे काम होने पर फेंक दिया जाता है । उसके सुख–दुखों में किसी को भी सहानुभूती नहीं थी । अनेक सामाजिक कुप्रथाओं का बंधन उसी पर था । उसके कारण उसका जीवन अधिकाधिक दुःखी बन गया था । नारी का समाज में स्वतंत्र अस्तित्व भी नहीं था । समाज जीवन के अभिन्न अंग के रूप में उसे स्वीकार नाहीं किया गया था । प्रा. अर्जुन घरत का कहना – '' समाज और परिवार की, नारी एक अविभाज्य अंग है उसका विकास हुए बिना समाज का विकास अशक्य प्राय है । ''[6] भारतीय ग्रामीण भागों में पारिवारिक संदर्भो में नारी की स्थिति अनेक रिश्तों में बँटकर उस पर अनेक प्रकार के मानसिक दबाव डालती है । इसके बारे में डॉ. सुदेश बत्रा कहते हैं – '' पॉचवे–छठे दशक में भारतीय समाज में परिवर्तन की लहर आने पर भी स्त्रियॉ घुटती रहती हैं । आत्मपीडा में जीवन बीता देती हैं । ''[7] दांपत्य संबंध मुख्य रुप से पति पत्नी की समझ–बूझ, संतुष्टि तथा पारिवारिक स्थितियों पर निर्भर रहता हैं । किंतु बदलते संदर्भो में पति–पत्नी दो विभिन्न भाग बनकर अपने–अपने हित में खोकर अपनी व्यक्तिगत खुशियों को पूरा करने की कोशिश में एक–दूसरों को कुंठित, दुखी करते हैं । इसमें संबंधों में तनाव उत्पन्न होता है । आधुनिक नारी पति को परमेश्वर नहीं मानना चाहती, उसकी मनमानी को नजर अंदाज नहीं कर सकती । वह उसके अत्याचारों को भी सहन नहीं कर पाती । वह विद्रोहिणी का रूप लेती है । आधुनिक नारी विवाहोपरांत विधवा हो जाती है तो संस्कृति के माध्यम से उसपर अन्याय ही किया जाता है । इसी कारण वह अंतर्जातीय विवाह करती है । नारी आधुनिक बनकर परंपरा से आयी हुई संस्कृति का विरोध करती है । इस संदर्भ में डॉ. विनोद वर्मा कहते हैं– '' इंद्रियॉ ही है जो हमारे शरीर को इस संसार से जोडती हैं और हमें निरंतर ऐंदिग्रक अनुभवों से सराबोर रखती हैं, चूँकि सेक्स लाखो ऐंद्रिक अनुभवों से एक है । इसीलिए एक तो व्यक्तिगत या स्वतंत्र रूप में नहीं देखा जा सकता, दूसरे यह दो प्रमुख ब्रह्मांडीय शक्तियॉ स्त्री–पुरुष द्वारा एक–दूसरें का शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक स्तर पर संभोग है । स्त्री–पुरुष का इन तीनों स्तरों पर संभोग इन्हें एक अद्वितीय आनंद की अनुभूति देता है ।''[8] सेक्स व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकता है, पारंपारिक रुढियों और मर्यादाओं को तोडकर पुरुष वर्ग, हवा पानी और भोजन की तरह सेक्स से भी अपना सरोकार बनाए रखने का प्रयत्न करता रहा है । इससे आधुनिक नारी विधवा होने के बाद भी शादी करती है । कृष्णा सोबती ने अपने कथा साहित्य में ग्रामीण आधुनिक नारी का चित्रण यथार्थ रुप से इस प्रकार किया है –

कहानियों में आधुनिक नारी का चित्रण

ग्रामीण भागों में आज कालपरत्वे परिवर्तन दिखाई देता है । आधुनिक नारी का रूप दृष्टिगोचर होता है । ' दादी–अम्मा' कहानी में आधुनिक नारी का रूप दिखाई देता है । शादी के समय पहले पडे गहन किए जाते थे और साज शृंगार भी अलग रहता था । इसमें आधुनिक नारी ने परिवर्तन किया है । यह देखकर दादी–अम्मा बहू से कहती, लडकियों में आजकल यह कैसा चलन है ?बहू के हाथों और पैरों में मेहंदी क्यों नही रचाई ? ' बदली बरस गई ' कहानी में आधुनिक नारी का रूप दिखाई देता है । कल्याणी आधुनिक नारी है इसी कारण उसका मन मॉ के साथ आश्रम में नही लगता है । वह विद्रोह करके आश्रम के बाहर जाती है । आश्रम की कोठरी में उकस मन घुटता है । इसी कारण वह मॉ का विचार न करते हुए आश्रम छोडकर चली जाती है ।

उपन्यासों में आधुनिक नारी का चित्रण

भारतीय ग्रामीण भागों में ही आधुनिक नारी का रूप देखने को मिलता है । आधुनिक नारी जब यह देखती है कि पति का बर्ताव ठीक नहीं है तो वह विद्रोही बन जाती है । वह पति से हमेशा झगडा करती है । ' मित्रो मरजानी ' उपन्यास की मित्रो ऐसी ही नारी है । मित्रो और सरदारी लाल में हर दिन झगडे होते रहते हैं । वह पति को काले पानी की सजा देना चाहती है । सदारी लाल उसे हमेशा नजर नीची करने के लिए कहता है । मित्रो उसे अच्छी नहीं लगती । वह कहता –'' यह कूडा मेरे भाग था ! इससे कोई चुडी–चमारन अच्छी थी। ''[9]

धनवंती मित्रो और उसके पति सरदारी लाल के दांपत्य जीवन के बारे में चिंतित है । वह कहती है– '' इन दोनों के हाथों बडी दुखी हूँ । यह तो पुराना जूडी का ताप है । आज नही तो कल, कलम नही तो परसो । जैसा अभागा अपना सरदारी लाल वैसी है खपाना–कलपानेवाली बहुरी मिल गई ।''[10] आधुनिक संस्कृति के अनुसार भारतीय संस्कृति में बहुत सारा बदलाव आ गया है । आधुनिक युग में अंतर्जातीय विवाह को भी काफी प्रोत्साहन दिया जा रहा है । 'डार से बिछुडी' उपन्यास की विधवा मेहर खत्री जाति छोकर मुस्लिम धर्म के शेखजी से विवाह कर लेती है । पाशो भी मुस्लिम धर्म के करीम से प्यारी करती है । यह देखकर पाशो के मामू क्रोधित होकर कहता है – ''मौत आए तुझे, कहनै है मॉ शेखों के घर जा बैठी अब लडकी इस दिल में रहेगी । ''[11] 'जिंदगीनामा' की लखमी भी अपनी ब्राह्मण जाति छोडकर मुस्लिम सैयदडे नामक लडके से प्यार करती है । इसे बडी शाहरी और चाची से विरोध होता है । जैसे – '' धिक्कार री, तू ब्राह्मनों की जायी डुली भी तो मलेक्ष्छ पर । बडा उसे सैयदजादा बुलाने चली है । पहले साल जुलाहा, दूजे शेख, पैसे चोखे आ गए तो सैयद । छोड दे री, लिद से निकाल बाहर कर उसका ख्याल । जात–धर्म से बाहर वह तेरा कुछ नहीं मल्ला ।''[12] किंतु ऐसे समय मेहर या लख्मी जैसी नारियॉ आधुनिक बनकर परंपरा से आयी हुई संस्कृति का विरोध कर देती हैं । 'जिंदगीनामा' के महरी चाची ने भी अंतर्जातीय विवाह करने का ढाढस किया है ।

निष्कर्ष

ग्रामीण भागों में आधुनिक नारी का दांपत्य जीवन कष्टमय है । दांपत्य संबंधों में तनाव अथवा झगडे होते हैं । भारतीय संस्कृति में आधुनिक नारी रूप से परिवर्तन हो रहा है । आधुनिक युग में अंतर्जातीय विवाह को भी काफी प्रोत्साहन दिया जा रहा है । नारियॉ आधुनिक बनकर परंपरा से आयी हुई संस्कृति का विरोध कर देती हैं । आधुनिक नारियों ने वैधव्य के उपरांत शादी कर भारतीय संस्कृति को नकारा है । नारी पारंपारिक रीति–रिवाजों को नकारते हुए प्रगति कर रही है इसका चित्रण सोबती के कथा साहितय में वास्तविक रूप से हुए है ।

संदर्भ

1.यज्ञदत्त शर्मा – प्रबंध सागर पृ. 153
2.कृष्णा बिहारी मिश्र – आधुनिक आंदोलन और आधुनिक हिंदी साहित्य पृ. 28
3.डॉ. रेवा कुलकर्णी – हिंदी सामाजिक उपन्यासों में नारी पृ. 7
4.जयश्री बरहाटे – हिंदी उपन्यास : सातवॉ दशक पृ. 11
5.डॉ. गोविंद चातक – आधुनिक हिंदी शब्दकोश पृ. 62

6.प्रा. अर्जुन धरत – नागार्जुन के नारी पात्र पृ. 144
7.डॉ. सुरेश बत्रा – नारी अस्मिता पृ. 48
8.डॉ. विनोद वर्मा पृ. 4
9.कृष्णा सोबती – मित्रो मरजानी पृ. 12
10.वही, पृ. 11
11.कृष्णा सोबती – डार से बिछुडे पृ. 14
12.कृष्णा सोबती – जिंदगीनामा पृ. 267